मंगलवार व्रत की आरती

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता,

मंगल मंगल देव अनन्ता ||

हाथ वज्र और ध्वजा विराजे,

कांधे मूंज जनेउ साजे

शंकर सुवन केसरी नन्दन,

तेज प्रताप महा जग वन्दन ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

लाल लंगोटा लाल दोऊ नयना,

पर्वत सम फारत सेना |

काल अकाल जुद्ध निलकारी,

देश उजारत क्रुद्ध अपारी॥

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

राम दूत अतुलित बलधामा,

अंजनि पुत्र पवन सुत नामा |

महावीर विक्रम बजरंगी,

कुमति निवार सुमति के संगी ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

भूमि पुत्र कंचन बरसावे,

राजघाट पुर देश दिवावें |

शत्रुन काट-काट महिं डारे,

बन्धन व्याधि विपत्ति निवारें ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

आपन तेज सम्हारो आपै,

तीनो लोक हांक ते कांपै |

सब सुख लहैं तुम्हारी शरणा,

तुम रक्षक काहू को डरना ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

तुम्हरे भजन सकल संसारा,

दया करो सुख दृष्टि अपारा |

राम दण्ड कालहु को दण्डा,

तुमरे पर सिहोत सब खण्डा ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

पवन पुत्र धरनी के पूता,

दोउ मिल काज करो अद्भुता |

हर प्राणी शरणागत आये,

चरण कमल रज शीश नवाये ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

रोग शोक बहुत विपत्ति घिराने,

दारिद्र दुःख बन्धन प्रकटाने |

तुम तजि और न मेटन हारा,

दोऊ तुम हो महावीर अपारा ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

दारिद्र दहन, हरन ऋण त्रासा,

करो रोग दुःख दुःस्वप्न विनाशा |

शत्रुन करो चरन के चेरे,

तुम स्वामी हम सेवक तेरे ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

विपत्ति हरन मंगलमय देवा,

अंगीकार करो यह सेवा |

मुदित भक्त विनती यह मोरी,

देव महाधन लाख करोरी ||

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता .....

दोहा

श्री मंगल जी की आरती

हनुमत सहित जु गाई |

होइ मनोरथ सिद्ध सब,

अन्त विष्णुपुर जाई ||